

M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. ^{Ref.}
_{Ser.} 146

Title: *Rudra*

2924

Incomplete

146

:	:	(५५) Rudra	: Title
:	:	Rudradya	: Author
:	:	(T-Samhiā)	: Editor
:	:		: Year, Vols.
:	:		: Publisher
146	:	:	: Remarks

इति विसं मा स ॥ शुभं भव ॥ ॐ ॥

धुमनिष्यमधुजनिष्यमधुवक्ष्यामिमधुनदिष्यामिमधुमतीदेवेभ्यो वानेभ्यः
 द्यास्त ५ ॥ धुमेभ्यो ननुष्यभ्यस्तमादेवा जवंतु शोभयै पितरो नुमंतु ॥ १ ॥
 शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ॐ ॥ सह नो भवतु ॥ सह नो भुनक्तु ॥ सह वीर्यं कर
 णवहे ॥ तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहे ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्क १६ २४ नंदननामसंवत्सरे ॥ उदगयनेत्राशीकुते ॥
 त्रितेनारु सितेपक्षे द्वितीयां भानुवासरे ॥ गुरुपेनामेनालेखितं दाशेपल
 यमुस्तकं ॥ १॥ लेखकपाठकयोः शुभं भवतु ॥ श्रीसांबशिवार्पणमस्तु ॥

त्वत्तं यत्तौ यत्ते न कल्पतां ॥ १०॥ एकाचमेति स्त्रश्चमे पंचचमे सप्तचमे नवचमे
 एकादशचमे त्रयोदशचमे पंचदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे एकविंशति
 श्चमे त्रयोविंशतिश्चमे पंचविंशतिश्चमे सप्तविंशतिश्चमे नवविंशतिश्चमे
 एकात्रिंशच्चमे त्रयोविंशतिश्चमे चतस्रश्चमे द्वाचमे द्वादशचमे षोडश
 चमे विंशतिश्चमे चतुर्विंशतिश्चमे द्वात्रिंशच्चमे षड
 त्रिंशच्चमे चत्वारिंशच्चमे चतुश्चत्वारिंशच्चमे द्वाचत्वारिंशच्चमे वा
 जश्च त्रसवश्चापि जश्च कतुश्च सुवश्च मंडी च व्यभिचयश्चां सायनश्चां हश्च
 भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च ॥ ११॥ ॥ इति देवहर्षनुर्यसनीर्बहस्पति
 सक्थामदोनेत्रांसिपदिश्च देवाः सत्त्ववाचः पृथिविमातृमाताहं साम

ताश्रमेव भूथश्रमेस्वगाकारश्रमे ॥ ८ ॥ जगिश्रमे घर्मश्रमे कर्मश्रमे सूर्यश्रमे प्रा
 णश्रमे धर्मश्रमे पृथिवीचमेदितिश्रमेदितिश्रमे द्यौश्रमे शक्रश्रमे गुलेयोदि
 शश्रमे यज्ञेन कल्पतामृकमेसामचमेस्तोमश्रमे यजुश्रमे दीक्षाचमेतश्रमे पं
 क्रतुश्रमे व्रतचमे होराचमे योर्वस्याबहद्व्यंतरेचमे यज्ञेन कल्पतां ॥ ९ ॥ गभीश्रमे
 वसाश्रमे अविश्रमे अवीचमेदिसवाचमेदिसोहीचमे पंचाविश्रमे पंचावा
 चमे त्रिवत्सश्रमे त्रिवसाचमे तुर्यवाचमे तुर्योहीचमे पञ्चवाचमे पञ्चोहीचमे उ
 क्षाचमे वशाचमे रुषभश्रमे वहचमे नृपुत्रचमे धेनुश्रमे आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्रा
 णो यज्ञेन कल्पतामपा नो यज्ञेन कल्पता व्या नो यज्ञेन कल्पता चक्षुर्यज्ञेन कल्प
 तां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता मनो यज्ञेन कल्पता वाग्यज्ञेन कल्पता मोक्षायज्ञेन क

९९

१५६
 अश्रमे धिपतिश्रमे मउपांशुश्रमे तयामश्रमे ऐंद्रवायवश्रमे मैत्रावरुणश्रमे
 मजाश्रमे नश्रमे प्रतिप्रस्थानश्रमे शुक्रश्रमे मंथीचमे मजाग्रयणश्रमे वैश्वदेवश्रमे
 मे भूवश्रमे वैश्वानरश्रमे क्रतुगृहश्रमे तिगाह्याश्रमे ऐंद्राग्रश्रमे वैश्वदेवश्रमे
 मे ~~भूवश्रमे वैश्वानरश्रमे~~ मस्तुतीयाश्रमे माहेन्द्रश्रमे आदित्यश्रमे सावित्र
 श्रमे सारस्वतश्रमे पौष्मश्रमे पालीवतश्रमे हरियोजनश्रमे ॥ ७ ॥ इधमश्रमे
 बर्हिश्रमे वेदिश्रमे धिसिमियाश्रमे सुवश्रमे चमसाश्रमे ग्रावाणश्रमे स्वरवश्रमे
 मउपरवश्रमे धिषवतोचमे द्रोणकलशश्रमे वायव्यानिचमे पूतश्रमे चमआ
 धवानीयश्रमे आग्नीध्रचमे हविर्दानं चमे गृहश्रमे सदैवश्रमे पुरोडाशश्रमे पच

९९

ॐ चं चं मे ह्यं चं चं मे ग्राभ्याश्च मे पशवश्च आरण्याश्च यज्ञेन कल्पंतां च वित्तं च
भुवित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसुच मे वसतिश्च मे कर्म च मे नृत्तिश्च मे ग्राभ्या
ए मं च मं इतिश्च मे गतिश्च मे ॥ ५ ॥ अग्निश्च मं इतिश्च मे सोमश्च मं इतिश्च मे सवि
मे र ता च मं इतिश्च मे सस्वती च मं इतिश्च मे पूषा च मं इतिश्च मे बृहस्पतिश्च मं इतिश्च मे भूमि
च मं इतिश्च मे वरुणश्च मं इतिश्च मे त्वष्टा च मं इतिश्च मे धाता च मं इतिश्च मे विश्व
श्च मं इतिश्च मे विश्वे नौ च मं इतिश्च मे मरुतश्च मं इतिश्च मे विश्वे च मे देवा इतिश्च मे पृ
थिवी च मं इतिश्च मे तरिषं च मं इतिश्च मे द्यौश्च मं इतिश्च मे दिशश्च मं इतिश्च मे म
ही च मं इतिश्च मे प्रजापतिश्च मं इतिश्च मे इतिश्च मे ॥ ६ ॥ अ० शुभ्रमे र शिभ्रमे र